के ये दुःख संसार में सर्वत्र दृष्टिगोचर हैं। किन्तु जो पुरुष भगवान् के नित्य दास के रूप में अपने यथार्थ स्वरूप को और भगवत्स्वरूप को जान लेता है, वह भगवद्भक्ति के परायण हो जाता है। इससे वह उन वैकुण्ठ-लोकों में गमन करने का अधिकारी बन जाता है, जहाँ न तो दुःखमय प्राकृत-जीवन है और न काल एवं मृत्यु का प्रवेश ही है। स्वरूपज्ञान से दिव्य भगवत्स्वरूप का बोध भी हो जाता है। जो मनुष्य भ्रमवश जीव और भगवान् को बराबर मानता है, वह अज्ञानी है और इसलिए भगवद्भक्ति करने के योग्य नहीं। वह तो अपने को ही ईश्वर मान बैठता है, जिससे बारम्बार जन्म-मृत्यु के चक्र में गिरना पड़ता है। दूसरी ओर, जो यह जानते हुए कि वह स्वरूप से भगवान् का नित्य दास है, भगवत्सेवा के परायण हो जाता है, वह तत्क्षण वैकुण्ठलोक का अधिकारी बन जाता है। भगवत्सेवा को ही कर्मयोग, बुद्धियोग अथवा भक्तियोग कहते हैं।

**यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।**
**तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च।।५२।।**

**यदा**=जिस काल में; **ते**= तेरी; **मोह**=मोहरूप; **कलिलम्**=सघन अटवी को; **बुद्धिः**=भगवत्सेवा युक्त बुद्धि; **व्यतितरिष्यति**=पार कर जायगी; **तदा**=उस समय; **गन्तासि**=प्राप्त होगा; **निर्वेदम्**=वैराग्य को; **श्रोतव्यस्य**=सुनने योग्य; **श्रुतस्य**=सुने हुए के; **च**=तथा।

### अनुवाद

**जब तेरी बुद्धि मोहरूपी सघन दलदल को पार कर जायगी, उस समय तू सुने हुए और जो सुनने योग्य है, उससे भी वैराग्य को प्राप्त होगा।।५२।।**

### तात्पर्य

महाभागवतों के जीवन में ऐसे अनेक उत्तम उदाहरण उपलब्ध हैं, जिन्हें भगवद्भक्ति के द्वारा वैदिक कर्मकाण्ड से वैराग्य हो गया। जब मनुष्य को श्रीकृष्ण का और उनसे अपने सम्बन्ध का तत्त्वबोध होता है, तो सकाम कर्मों से स्वाभाविक विरक्ति हो जाती है, चाहे वह कुशल ब्राह्मण ही क्यों न हो। भक्तपरम्परा के महान् आचार्य श्री माधवेन्द्र पुरीपाद का कथन है—

**सन्ध्यावन्दन भद्रमस्तु भवतो भोः स्नान तुभ्यं नमो।**
**भो देवाः पितरश्च तर्पणविधौ नाहं क्षमः क्षम्यताम्।।**
**यत्र क्वापि निषद्य यादवकुलोत्तमस्य कंसद्विषः।**
**स्मारं स्मारमघं हरामि तदलं मन्ये किमन्येन मे।।**

"हे त्रिकाल सन्ध्या-वन्दन ! तुम्हारी जय हो। हे स्नान ! तुम्हें प्रणाम है। हे देवपितृगण ! आपके लिए तर्पण करने में मैं अब असमर्थ हो गया हूँ। क्षमा करें। अब तो जहाँ भी मैं बैठता हूँ, यादवकुल-अवतंस कंसारि श्रीकृष्ण का ही स्मरण करता हूँ और इस प्रकार करते-करते सब पापों से मुक्त हो गया हूँ। मेरे लिए यही पर्याप्त है।"